शोध-चिंतन पत्रिका: विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित ई शोध पत्रिका
वर्ष: 3, अंक:4; जनवरी-जून, 2022
पृष्ठ संख्या : 54-62

# कामाख्या शक्तिपीठ और लोक-विश्वास

✍ डॉ. प्रीति बैश्य

**शोध-सार:**

कामाख्या शक्ति पीठ की प्रसिद्धि समूचे भारतवर्ष में व्याप्त है। कामाख्या की उत्पत्ति के संदर्भ में विद्वानों में मतभेद पाये जाते हैं। कामाख्या देवी को लेकर प्रचलित किंवदन्तियों में से नरकासुर से संबन्धित किंवदंती विशेष रूप से ख्यात है। कामाख्या मंदिर में मनाये जाने वाले विविध त्योहार, उत्सव-अनुष्ठानों के साथ लोगों के लोक-विश्वास भी जुड़े हैं। इन त्योहारों में अंबुबाची, 'देल पूजा' (शिव पूजा) आदि के विशेष महत्व है।

**बीज-शब्द:** *कामाख्या, शक्ति पीठ, किंवदंती, त्योहार, लोक-विश्वास*

**प्रस्तावना :**

कामाख्या शक्तिपीठ विविध तंत्र-मंत्र, योग-साधना के सिद्ध स्थान है। यह असम राज्य के कामरूप जिले के गुवाहाटी के नीलाचल पहाड़ पर स्थित है। समूचे भारतवर्ष में सती के इक्यावन शक्तिपीठों में से कामाख्या भैरवी का शक्तिपीठ अन्यतम है। लोक-विश्वास है कि यहीं पर भैरवी का योनि-कुंड स्थित है।

**अध्ययन की पद्धति:**

प्रस्तुत अध्ययन की पद्धति व्याख्यात्मक और विश्लेषणात्मक है। इस अध्ययन में क्षेत्र अध्ययन करते हुए तथ्य संग्रह किये गये हैं और साक्षातकार, प्रश्नोत्तर आदि पद्धतियों की भी सहायता ली गयी है। इसमें कामाख्या देवी और कामाख्या मंदिर से संबन्धित विविध आलोचनात्मक ग्रन्थों की सहायता भी ली गयी हैं। ग्रंथसूची तथा उद्धरणों में यथा संभव 'आधुनिक भाषा संस्था' द्वारा निर्धारित एम. एल.ए. के छठे संस्करण का प्रयोग किया गया है।

असमीया उद्धरणों के लिप्यंतरण में असमीया 'य' के लिए हिन्दी में भी 'य' रखा गया है। असमीया 'य' के 'ज' वाले उच्चारण के लिए लिप्यंतरण में 'य़' रखा गया है । बाकी वर्णों का लिप्यंतरण हु-ब-हु रूप में किया गया है ।

**विश्लेषण :**

कामाख्या मंदिर शक्ति की देवी सती का मंदिर है । भक्तों में यह विश्वास है कि माँ कामाख्या सब की मनोकामना पूर्ण करती है । यह महान शक्तिपीठ अनेक देश-विदेश के श्रद्धालुओं और तांत्रिकों के आकर्षण का केंद्रस्थल है ।

अनेक विद्वानों ने कामाख्या शब्द पर विचार व्यक्त किया है । डॉ. बाणीकांत काकति कामाख्या का 'कामा' शब्द पर विचार करते हुए लिखते हैं-

> As the innumerable names of the goddess are mostly names of local goddesses both Aryan and non-Aryan, it may be suspected that the formation *Kama* in *Kamakhya* is of extra-Aryan origin. There is a strong suggestion of its correspondence to Austric formations like the following: *Kamoi*, Demon; *Kamoit*, Devil : *Komin*, Grave; *Kamet*, Corpse (Khasi) ; *Kamru*, a god of the Santals. (काकति 2004:38)

अर्थात, देवी के असंख्य नामों में ज्यादातर आर्य और अनार्य दोनों के स्थानीय देवी के नाम हैं, इसलिए यह संदेह हो सकता है कि कामाख्या के कामा शब्द का गठन आर्य मूल से नहीं हुआ है । ऑष्ट्रिक संरचनाओं में इसकी समानता का एक मजबूत सुझाव निम्नलिखित है: कमोई, दानव; कमोईट, शैतान; कोमिन, श्मशान; कामेट, लाश (खासी) ; कामरु, संथाल लोगों के एक देवता है ।

बड़ो-कछारी लोग 'बाथौ देवता'(=शिव) की पूजा के साथ ही 'खाम माइखा'(=कामाख्या) की पूजा करते हैं । खेराय पूजा की वेदी में भी कामाख्या की वेदी निर्मित की जाती है ।

राजमोहन नाथ ने भी 'का-माइ-खा'(=कामाख्या) शब्द पर विचार व्यक्त किया है ।

खासी भाषा में 'खा' शब्द का अर्थ प्रसवकारिणी है तथा 'का-माइ-खा' का अर्थ आद्या

प्रसवकारिणी मातृ है। वही आदि मातृ 'कामाइखा' या 'कामाख्या' है । (बरदलै 2014:152)

कामाख्या की उत्पत्ति के संदर्भ में विद्वानों में मतभेद मिलते हैं । 'कालिका पुराण' में कामाख्या की उत्पत्ति के बारे में इसतरह उल्लिखित है - जब ब्रह्मा और विष्णु सृष्टि कार्य में रत थे, तब शिव सृष्टि कार्य से दूर तपस्या में तल्लीन थे । कुछ उपाय न सूझकर ब्रह्मा मानस पुत्र दक्ष को जगत-जननी महामाया की पूजा करने का उपदेश देते हुए कहते हैं कि वह इस प्रकार प्रार्थना करे कि महामाया उसकी बेटी के रूप में जन्म लेकर शिव पत्नी के रूप में प्रसिद्ध हो जाय । इसके लिए दक्ष अनेक वर्षों की कठोर तपस्या करता है, जिससे संतुष्ट होकर महामाया आविर्भाव होती हैं और कहती हैं कि वे दक्ष कन्या के रूप में जन्म लेकर शिव की पत्नी बनेगी लेकिन दक्ष द्वारा अनादृत होने पर शरीर त्याग देगी । प्रतिज्ञानुसार महामाया दक्ष कन्या के रूप में जन्म लेकर शिव की पत्नी बनती हैं और बाद में सती के रूप में प्रसिद्ध होती है । कैलाश निवासी शिव द्वारा यथोचित सम्मान न मिलने पर दक्ष बहुत अपमान महसूस करता है । दूसरे देवताओं की अपेक्षा शिव को नीचा दिखाने के उद्देश्य से कुछ दिनों के बाद दक्ष एक यज्ञ का आयोजन करता है, जिसमें शिव और सती को बुलाया नहीं जाता। शिव दक्ष द्वारा आयोजित यज्ञ में जाने के लिए मना करने पर सती अत्यंत क्रोधित हो उठती हैं । वे तीसरी आँख से आग उगलने लगती हैं और धीरे-धीरे श्यामा मूर्ति में परिवर्तित हो जाती हैं । शिव उससे भागकर जिधर भी जाना चाहते हैं, सती उधर ही दशमहाविद्या का रूप धारण करती हुई उनके रास्ता रोके सामने आ जाती हैं । शिव भयभीत होकर सती के रास्ते से हट जाते हैं । बिन बुलाई सती को यज्ञ में देखकर दक्ष क्रोधित हो उठता है और शिव की निंदा करने लगता है । सती पति की निंदा सहन न कर पाने के कारण दु:ख में विह्वल होकर यज्ञ-शाला में ही प्राण त्याग देती हैं । यह खबर सुनकर शिव यज्ञ-शाला में जा पहुँचे । वे रौद्र रूप धारण करते हुए राजा दक्ष का मस्तक छेद कर देते हैं। लेकिन दक्ष की पत्नी बीरिणी की स्तुति से उसे बकरे का मस्तक प्रदान करके प्राणदान देते हैं । शिव सती के शरीर को कंधे में उठाकर उन्मत्त की भाँति त्रिभुवन में घूमने लगते हैं । देवतागण इससे भयभीत होकर शिव के क्रोध को शांत करने के लिए सृष्टि रक्षार्थ हेतु विष्णु से प्रार्थना करने लगते हैं । विष्णु जगत के कल्याण के लिए सुदर्शन चक्र से सती के देह को धीरे-धीरे इक्यावन खंडों में काटकर विभक्त करते हैं । सती के अंग जहाँ-जहाँ गिरे

वहाँ-वहाँ शक्ति पीठ बने। 'तंत्र सौदामिनी' के अनुसार इनकी संख्या बावन हैं, लेकिन पचास नामों का ही उल्लेख मिलता हैं- हिंगुला पीठ, कश्मीर पीठ, जालंधर पीठ, प्रयाग पीठ, वाराणसी पीठ, रामगिरि पीठ, मिथिला पीठ, वृन्दावन पीठ, कुरुक्षेत्र पीठ, ज्वालामुखी पीठ, नेपाल पीठ, गण्डकी पीठ, विराट पीठ, मणिवेदीका पीठ, पंचाग पीठ, मानस पीठ, वक्रेश्वर पीठ, बहुला पीठ, त्रिस्रोता पीठ, काली पीठ, युगधा पीठ, रत्नावली पीठ, किरीट पीठ, नलहाटी पीठ, नंदीपुर पीठ, अट्टहास पीठ, वैद्यनाथ पीठ, मगध पीठ, कालमाधव पीठ, विरजा पीठ, प्रभास पीठ, भैरव पीठ, उज्जयिनी पीठ, विभास पीठ, करवीर पीठ, जनस्थान पीठ, कन्याकाश्रम पीठ, शुचि पीठ, गोदावरी पीठ, कर्णाट पीठ, श्रीपर्वत पीठ, कांची पीठ, कामगिरि पीठ(गुवाहाटी, असम), जयंती पीठ, त्रिपुरा पीठ, चत्वाल पीठ, सुगंधा पीठ, करतोया तट पीठ, यशोर पीठ, लंका पीठ (बरदलै 2014:303-304)। लोकविश्वास है कि सती का योनिमंडल कामरूप के कुब्जिकापीठ नामक पहाड़ पर गिरता है। महामाया देवी भी उसी योनि में विलीन हो जाती हैं तथा वह पहाड़ नीले रंग का हो जाता है।

देवी को कामाख्या कहे जाने के संदर्भ में डॉ. बाणीकांत काकति का विचार है कि देवी को कामाख्या इसलिए कहा जाता है क्योंकि देवी शिव के साथ अपने काम को संतुष्ट करने के लिए चुपके से वहाँ आयी थीं-

> The mountain represented the body of Siva himself and when Sati's genital organ fell on it, the mountain turned blue. The goddess herself is called Kamakhya, because she came there secretly to satisfy her amour (*kama*) with him. (काकति 2004:34)

कामरूप का कामाख्या योनिपीठ एक विस्तृत भूखंड है। इसी में नीलाचल पहाड़ के अलावा मणिपर्वत, भस्माचल, ब्रह्मशैल आदि पर्वत भी हैं। कामाख्या की अष्टयोगिनियों के नाम हैं- गुप्तकामा, श्रीकामा, दीर्घेश्वरी, पाददुर्गा, बिंध्यबासिनी, कोटिश्वरी, बनस्था और भुबनेश्वरी।

नीलाचल पहाड़ के मनोभब गुफा के अंदर सती का योनिमंडल स्थित है। यह योनि लंबाई और चौड़ाई में इक्कीस उँगलियों के समान है और लाल रंग का है। कामरूप में सती की योनि गिरने के कारण कामरूप शक्तिरूपिणी महामाया का महापीठ है-

कामरूपं महापीठं सर्वकामफलप्रदम् (बरदलै 2014:141)

अन्यत्र देवी दुर्लभ हैं लेकिन कामरूप के घर-घर में देवी सुलभ हैं। नीलकूट पर्वत पर मस्तक नवाने से सौगुना फल प्राप्त होते हैं, जिसका उल्लेख 'कालिकापुराण' में इसप्रकार मिलता है-

अन्यत्र बिरला देवी कामरूपे गृहे गृहे ।।

ततः शतगुणा प्रोक्ता नीलकूटस्य मस्तके॥ (देवी 2016:4)

कामाख्या देवी के रूप का वर्णन विविध ग्रन्थों में उपलब्ध है। 'योगिनीतंत्र' के अनुसार- कामाख्या देवी के सभी अंग सिंह के चर्म से आवृत हैं। वे विशाल उदरयुक्त, बाघ की खाल पहनी हुई, हरोदरा, परमानंद और अट्टहास महोत्सव से युक्त हैं। वे सुनंदा, लोकप्रीतिकारिणी, व्यक्त अष्टादसलोचना हैं-

सिंहचर्मोतरासंगा कामाख्या बिपुलोदरा
बैयाघ्रचर्मबसना यथा चैब हरोदरा
परमानन्दसंभूता साट्टहासा महोत्सवा
सुनन्दा लोकप्रीता च ब्यक्ताष्टादसलोचना (बरदलै 2014:161)

'योगिनीतंत्र' में ब्रह्मरूपा काली कैसे कामाख्या बनी, इसका वर्णन मिलता है। सृजन-कार्य सम्पन्न करने के बाद ब्रह्मा के मन में उत्पन्न हुए अहंकार को नष्ट करने के उद्देश्य से काली केशी नामक दानव का सृजन करती हैं। ब्रह्मा अहंकार त्याग करते हुए उसके वध के लिए विष्णु के साथ मिलकर विघ्नहारिणी काली देवी की स्तुति करने लगते हैं। काली देवी ब्रह्मा के अहंकार नष्ट होते देखकर हुंकार (बीजमंत्र) से केशी दानव का वध करती हैं। देवताओं ने जिस जगह पर केशी दानव के वध के लिए काली देवी की पूजा की थी, उसी जगह कामाख्या देवी के योनिमंडल की उत्पत्ति हुई, जो सभी जीवों का उद्गम स्थल है और वह फलदायक महापीठ भारतवर्ष में कामरूप नाम से प्रसिद्ध हुआ।

कामाख्या देवी को लेकर अनेक किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं। उनमें से नरकासुर से संबन्धित किंवदंती विशेष ख्यात है। नरकासुर देवी कामाख्या के अपूर्व रूप से मोहित होकर उनसे विवाह करने का प्रस्ताव देता है। देवी नरकासुर से छल करने के उद्देश्य से कहती हैं कि अगर वह एक ही

रात में उनके मंदिर तक चढ़ने के लिए पत्थर से सीढ़ियाँ निर्मित करने में समर्थ होगा तभी वे विवाह के प्रस्ताव को स्वीकारेंगी । देवी को जब यह ज्ञात हुआ कि आसुरिक शक्ति के प्रयोग से नरकासुर सुबह होने से पहले ही सीढ़ियाँ निर्माण करने का काम समाप्त करने वाला है, तब वे माया मुर्गी के द्वारा सुबह होने का संकेत देती हैं और नरकासुर की अभिलाषा पर पानी फेर देती हैं ।

नरक के बाद अनेक हिन्दू राजाओं ने कामरूप पर शासन किया । समय बीतने के साथ ही विविध प्राकृतिक विपदा, राष्ट्रविप्लव, धर्मविप्लव आदि के कारण कामाख्या मंदिर को पर्याप्त क्षति पहुँची । पूरा महापीठ जंगलों से भर गया था । लेकिन कामाख्या देवी के पीठ के रूप में लोग वहाँ पशु-पक्षियों के बलि चढ़ाकर पूजा करते रहें ।

उन दिनों कोच बिहार के राजा विश्वसिंह और शिवसिंह आहोम राजा के विरुद्ध लड़ाई लड़कर अपनी सेनाओं से बिछड़कर नीलाचल में जा पहुँचे । अपनी सेनाओं से पुनर्मिलन के लिए वे जाग्रत पीठ रूपी देवी से प्रार्थना करने लगे । देवी उसकी मनोकामना पूर्ण करती हैं । राजा विश्वसिंह को देवी की अपार महिमा चकित कर देती है और राजा कामाख्या मंदिर निर्माण कार्य में लग जाते हैं । सर्बानन्द राजकुमार के अनुसार कोच राजा विश्वसिंह ने 1515-40 ई. में कामाख्या मंदिर का निर्माण किया था । 'असम बुरंजी' के अनुसार 1553 ई. में कालापहाड़ ने यह मंदिर नष्ट किया था, लेकिन विश्वसिंह का बड़ा बेटा राजा नरनारायण और उसके भाई शुक्लध्वज ने 1565 ई. में इसका पुनर्निर्माण किया था । वे मंदिर निर्माण होने के बाद सात दिन आहार का त्याग करते हुए देवी की पूजा में रत थे । राजा नरनारायण ने तीन लाख होम, एक लाख भैंसा, बकरा, बत्तख, मछली, हिरन, कछुआ आदि के बलि चढ़ाने के साथ ताम्र फलक देकर 140 *पाइक* (आहोम शासनकाल में दूसरों की जमीन पर रहने वाली साधारण प्रजा) देवी के नाम पर उत्सर्ग किये थे। इसका वर्णन 'दरङ राजबंशावली' में इसप्रकार मिलता है-

महिष छागल हंस मत्स्य पारावत ।
हरिण कच्छप बलि उपहार यत ॥
पूजा कराइलंत चतु:षष्टि उपहारे ।
सप्तदिन आछे दुइ भाइ निराहारे ॥

तिनि लक्ष होम दिला एक लक्ष बलि।

सात कुड़ि पाइक दिला करि ताम्रफलि॥ (बरदलै 2014:162)

डॉ. सूर्यकुमार भूञाँ के 'स्वर्गदेव राजेश्वरसिंह' ग्रंथ के अनुसार कोच बिहार के राजा नरनारायण और शुक्लध्वज ने कामाख्या मंदिर के पुनर्निर्माण किया था और उद्घाटन करते समय सौ से भी अधिक नर बलि चढ़ाया था (बरदलै 2014:146) । आहोम राजा प्रतापसिंह के समय कर्मचान्द और आठ क़ैदी राजाओं को देवी के आगे बलि चढ़ाने का वर्णन भी इतिहास में उल्लिखित है (बरदलै 2014:363) । स्थानीय किंवदन्ती के अनुसार नरसिंह नामक एक राजा ने भी नीलाचल के भैरवी मंदिर में अपना शिर काटकर देवी को भेंट चढ़ाया था । कामाख्या मंदिर में दिये जानेवाले बलि को 'भोगी' कहा जाता था । कोई-कोई विद्वान मानते हैं कि गौरीनाथ सिंह ने अठारहवीं शती के अंत में नरबलि देने की प्रथा बंद कारवायी थी। आहोम राजाओं ने दसमहाबिद्या के मंदिर और शिव मंदिरों का संस्कार किया था । इन मंदिरों के संस्कार-साधन करने में राजा रामेश्वर प्रसाद, शिवसिंह आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं ।

कामाख्या मंदिर के अंदर दुर्गा और महादेव के सोने की मूर्तियाँ विद्यमान हैं । नारायण, कल्कि अवतार, अन्नपूर्णा, देवी मनसा, केंदुकलाइ ब्राह्मण, बटुक भैरव, राजा नरनारायण और उसके भाई चिलाराय की मूर्तियाँ भी यहाँ संरक्षित हैं । विद्वानों के अनुसार कामाख्या मंदिर की मूर्तिकला का समय आठवीं शती से सत्रहवीं शती का है । नारायण की मूर्ति के नीचे के शिलालेख में यह खुदा हुआ है कि 1487 ई. में यह मंदिर निर्माण किया गया था । अंदर गुफा में कामाख्या देवी के साथ ही लक्ष्मी और सरस्वती के पीठस्थान भी हैं । कामाख्या मंदिर के पास काली, भैरवी, भुवनेश्वरी, तारा, षोड़शी(कामाख्या देवी), बगला, छिन्नमस्ता, धुमावती, कमला(लक्ष्मी), मातंगी(सरस्वती) के मंदिर हैं । भुवनेश्वरी का पीठ नीलाचल के शिखर पर है । भुवनेश्वरी महागौरी नाम से भी प्रसिद्ध थीं। इसके अलावा यहाँ सिद्धेश्वर, कामेश्वर, कौटिलिंग, अघोर और आम्रतकेश्वर शिव मंदिर भी स्थित हैं। कामाख्या के सिद्धेश्वर और कामेश्वर मंदिर शिवसिंह के समय निर्माण किये गये थे। कामाख्या

मंदिर के अगल-बगल में भैरव, गणेश आदि की मूर्तियाँ, सिंह, कमल आदि के नमूने से निर्मित पत्थर के प्रवेश द्वार विद्यमान हैं।

कामाख्या मंदिर के पूजा-पाठ 'बरपूजारी' उपाधि से विभूषित ब्राह्मण ही करते हैं। दूसरे ब्राह्मणगण कामाख्या धाम के चारों ओर स्थित दसमहाबिद्या के मंदिरों में पूजा करते हैं। भक्त सौभाग्यकुंड में हाथ-पैर धोकर गणेश देवता के दर्शन कर मंत्र उच्चारण से चलंता मूर्ति (दुर्गा और महादेव) और देवी कामाख्या की पूजा करते हैं। देवी दर्शन के बाद तीन बार मंदिर की परिक्रमा करते हैं। देवी को मांस-मछली, अंडे, चावल-दाल आदि का 'भोग' चढ़ाया जाता है। यहाँ भक्तों द्वारा अर्पित कबूतर, बत्तख, भैंसा, बकरे आदि का बलि दिया जाता है। विवाह, मुंडन, श्राद्ध, उपनयन, जातक कर्म आदि करने के लिए जो तीर्थयात्री दूर-दूर से आते हैं, ब्राह्मणगण पूजा-पाठ, होम-यज्ञ आदि के माध्यम से वे कार्य सम्पन्न कराते हैं।

कामाख्या मंदिर में विविध त्योहार मनाये जाते हैं। इन त्योहारों के साथ लोगों के कुछ विश्वास जुड़े होते हैं। इनमें अंबुबाची का विशेष महत्व है। यह उत्सव आषाढ़ महीने में मनाया जाता है। यह लोकविश्वास है कि उस समय धरती माँ तथा विश्व-माता कामाख्या रजस्वला होती हैं। अंबुबाची प्रवृति से अंबुबाची निवृत्ति तक मूल मंदिर बंद रहता है। अंबुबाची के तीन दिन देवी को 'भोग' नहीं चढ़ाया जाता, बल्कि फल चढ़ाया जाता है। अंबुबाची के समय देश-विदेश के बहुसंख्यक साधु, सन्यासी, यात्री आदि कामाख्या देवी के मंदिर का दर्शन करने के लिए आते हैं। अंबुबाची मेला कामाख्याधाम में बड़े ही उत्साह और धूम-धाम से आयोजित किया जाता है। इसके अलावा कामाख्याधाम में मनाये जानेवाले उत्सव-अनुष्ठानों में प्रमुख हैं- कुँवारी पूजा, पहान विवाह (शिव-पार्वती का विवाह), मनसा पूजा आदि। सावन और भादो की संक्रांति के दिन मनसा की पूजा की जाती है। विवाहोपयुक्त स्वामी की कामना और परिवार की मंगल कामना करते हुए कुँवारी लड़कियों द्वारा मनायी जाने वाली 'देल पूजा' (शिव पूजा) भी यहाँ विशेष महत्व रखता है। लोगों का मानना है कि कामाख्याधाम में देवी कुँवारी के रूप में पूजा ग्रहण करती हैं। यहाँ के निवासी दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी, गणेश, बासंती, सूर्य, विश्वकर्मा आदि देव-देवियों की पूजा भी बड़े श्रद्धा से

करते हैं । वे सुहागिन पूजा, बिहु, फाग-उत्सव मनाते हैं । इनके अलावा अंबुबाची के समय कामाख्या क्षेत्र में रहनेवाली कुँवारी लड़कियों और औरतों द्वारा घर की श्रीवृद्धि के लिए 'साथा व्रत', पुत्र प्राप्ति और दीर्घायु के लिए 'मनंतरा व्रत', घर की मंगल कामना, कुँवारों का विवाह, धन की वृद्धि आदि के उद्देश्य से 'सुबचनी व्रत', जन्माष्टमी का व्रत आदि मनाते हैं ।

**निष्कर्ष:**

कामाख्या एक जाग्रत शक्ति पीठ है । लोक-विश्वास के अनुसार यहीं पर भैरवी की योनि-कुंड स्थित होने के कारण कामरूप शक्तिरूपिणी महामाया का महापीठ है । कामाख्या देवी को लेकर अनेक किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं । कामाख्या मंदिर में मनाये जानेवाले विविध त्योहारों में आषाढ़ महीने में मनाये जानेवाले अंबुबाची का विशेष महत्व है ।

**ग्रंथ-सूची:**

**अंग्रेजी ग्रंथ**

काकति, बाणीकान्त. The Mother Goddess Kamakhya. तीसरा.गुवाहाटी : असम प्रकाशन परिषद, 2004.

**असमीया ग्रंथ**

देवी, मीनाक्षी.कामाख्या धामर उत्सव-अनुष्ठान.पहला.गुवाहाटी:चन्द्र प्रकाश, 2016.

बरदलै, निर्म्मलप्रभा.देवी.छठा.गुवाहाटी:साहित्य प्रकाश, 2014.

**संपर्क सूत्र :**
सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग, प्रागज्योतिष महाविद्यालय
गुवाहाटी (असम)
pritibaishya@pragjyotishcollege.ac.in